

STUDENT'S NAME	TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT
ROLL NO.	DATE

2

जीवन का अधिकार - सुमित्रानन्दन पेट

सावंदा और उद्देश्य

जीवन का अधिकार वह कृपिता सुमित्रानन्दन पेट जो ने लिखी है। इस कृपिता ने कृपि का गा छाला है कि जीवन का अधिकार उसको हो है जो सभी और शक्तिमान है।

कृपि का मानना है कि जो समर्थ और शक्तिमान है वही सत्यपी जिंदगी जी लेता है। अर्थात् मेंदून, कल्पादृ, काम करने की सत्त्वन, ईमानदारी जिसके पास है वही जो जीने का अधिकारी है। और उसकी ही पूजा पूरा संसार उखा है।

जो उर्बल है वह धरती के लिए ही धानक है एक नरक के वह धरती के लिए ही भार बन जाना है। जोके को तेजा यह नियम ही उस उर्बल के लिए योग्य है और उसे उसके नर्म से ही उसे भुगतना पड़ता है।

जो परिहित्यनि वा, सौकर्हो का सामना करता है वही जीवन में जीत लेता है। जो योग्य है, जिसे अंदर हृदियन है, पात्रता है वही शक्तिशास्त्र में अपनी योग्य जगह पा सकता है। वही योग्य व्यक्ति प्रकृति को, पश्चु-पक्षी, प्राणियों को जीवनदान करता है। मानव-जीवन दो विकास उठाता है अतः सौसार के द्वितीय में नार्य उठता है इसीलिए वह इस धरती पर वही राजन रखता है। अतः सब के एक कल्याण के लिए वह अपना जीवन न्योद्घावर रखता है और इसीलिए वह अमर बनता है।

उद्देश्य

इष्टमकार इसी कृपिता के बारे कृपि के मनुष्य जीवन की सार्थकता उसके कर्म में है और उसे ही जीने वा अधिकार है वह कहने वा प्रयोग किया है। मेंदून, कल्पादृ, भव्याद् Modern

STUDENT'S NAME	TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT
ROLL NO.	DATE

ईमानदारी मनुष्य जीवन के भूल में है और जो इसे अपनाता है वही उसे ऐसा ही जीवन का अधिकार है यह कहने का प्रयास है कविता में किया गया है। अतः यही इस कविता का उद्देश्य है।

सन्दर्भ →

१) दुर्बल का धारक देव स्वयं,
समझो वह भू का भाव उसे।
'जोसे जो नैसा' नियम चली,
होना ही है अंहार उसे।

सन्दर्भ → निम्नलिखित सन्दर्भ सुभिरानदेन पंत लिखित 'जीवनस्थीर्ण का अधिकार' कविता की लिया गया है। यह सन्दर्भ कवि ने दुर्बल व्यक्तियों के जीवन का वर्णन किया है।

स्थैर्णकरण → कवि ने इस एवं पंक्तियों में यह उठाने का प्रयास किया है कि जो अपने आप को दुर्बल तथा असहाय समझ लेना है वह जहाँ तक्यों में घरनी के सिए भाव है। जैसा वह नहीं भरता है केवल उसे भूमतला पड़ता है और एक दिन इसी अंसार की कीला छुट्टी लेकर नहीं रहता। पड़ता है। जिसकी कोई परिपालन नहीं बचती तथा उसकी जीवन सार्थक नहीं हो पाता।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objective — कानूनी एवं

- 1] 'पेत जा अधिकार' यह कविता सुभित्रानंदन पेत जी में लिखी है।
- 2] सुभित्रानंदन पेत जा जन्म उत्तराखण्ड के ओडानी गाँव में 20 अक्टूबर 1900 ई. को हुआ।
- 3] सुभित्रानंदन पेत जी ने देश की स्वतंत्रता के लिए असहयोग आंदोलन में भाग लिया था।
- 4] सुभित्रानंदन पेत जी को प्रश्नि का सुकुमार कवि भी जाता है।
- 5] सुभित्रानंदन पेत प्रायवाद के प्रत्यक्ष कवि माने जाते हैं। ('उद्धवास', 'पल्लव', 'बोली', 'गांधी', 'गुजलन' इनके कुहि काव्यशंख हैं।)
- 6] ('चित्रधरा') एवं कहानी 42 पेत जी को मार्गीय शालपीठ अस्तकार से विचारित किया गया।
- 7] पेत जी को मार्गीय सरकार ने 1961 में 'पद्मभूषण' अस्तकार से सम्मानित किया है।
- 8] पेत जी को निधन 28 दिसंबर 1977 ई. में हुआ।
- 9] जो सार्वजनिक और शक्तिमान है उसे ही जीवन जीने की अधिकार है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

६] वलिका का परिचय - सुभद्राकुमारी चौहान

* सारांश और उद्देश्य

वलिका का परिचय यह कविता सुभद्राकुमारी चौहान ने लिखी है। इस कविता में कवियता ने बहुत ही मामिकता से एक वलिका का चित्रण किया है। कवियत्री ने कहा है कि एक वलिका को किसी गोद की शोभा बढ़ाती है तो उड़ि सेकर वह सुखी बैवाहिक जीवन का आधार बनती है। वह अपने से ही अपनी इच्छाओं को पूछता करती है अबको अपनी ओर से सुख देना चाहती है।

वह अंथर की दीपदीपक छेत्र है। आर्थिक धर या परिवार पर कोई संकट नहीं गया तो २५६ दिया बनकर जलती है और संकट को दूर करती है। वह परिवार के लिए सुखमान है, दरियाली है।

उसका दिल या दृश्य परिवर्त निरागस है। वह एक के ऊपर की ओरानी के बनना चाहती है। अन्ये दिल को अपने आपको सब के पास समर्पित छोड़ती है।

अन्यपन में माँ-बाप के घर के ऊगाने में बड़ी की रुकेती, सुख छुट्टी है, मनलती है, किसाकारी दाढ़ाती है। माँ-बाप के घर की शोभा बढ़ाती है। वह वलिका या नारी मंदिर में मार्गिणी कारी है आर्थिक मांगवान का लक्ष्य है। भूजा, पाठ, लप्ति तपि संषुक्ष्म वही है।

वह छोटी का, अन्यमा का लक्ष्य है। वह ऊगाने की शोभा है। उसमें कौशल्या और कालू-हृदय है। उसमें क्रमु या इस लीसी क्षमाकारीलता है तो मुहुर्मुहुर खेगावर जौखा उसके कुंद्र विरचन है। उस माँ में गौतम बुद्ध जैसी है अपारदया भावना है। भनुष्य ही नहीं प्राणी मानाओं के पास भी वह दृश्य की पात्र है।

उस में सुभद्रा जी कहनी है कि उसका परिचय
मुझसे पछँ रहे हो उसका परिचय एक-दो शब्दों
में कहें दूँ | वही उसको जान पूरीतः
जान सकता है जिसके दृष्टि में माँ का दिल हो

उद्देश्य इस कविता के बारे कवित्री ने
नारी को आवेगित विशेषज्ञाओं को छोड़ सारे
उदाहरणों से उसका महत्व प्रस्तुत किया है।
अत्यन्त नारी जीवन की महत्ता उसकी असुख
जीवन में प्रत्येक घटना कितनी महत्वपूर्ण है
जो वहाँ का साथ प्रयास कर कविता में
किया गया है।

महिला

॥

प्रश्न ईमा की सिमांचलता, नवी मुहम्मद का विश्वास
जीव-दया जिनवर गोतम की, आओ देखे इसके पास।

महिला

→ निम्नलिखित, सन्दर्भ/ पाठ्यांशों सुभद्राकुमारी
व्योहार लिखित, वालिका का परिचय कविता
को किया गया है।

महिला करण

→ इन पाठ्यांशों में कवित्री ने माँ के हृदय की
विशालता का उसके द्वारा प्रकृपाका का वर्णन करते
हुए कहती है कि माँ के पास प्रभु ईशा जैसी

स्त्रीलोभ, प्रहृति या वस्त्रमाल होता है, उसमें
मुहम्मद पाठ्यांश जैसा विश्वास मारा होता है।
साथ ही गोतम बुद्ध जैसी कुरु कृष्णी
के प्रश्न, संसार के प्रति अपार कुरुक्षेत्र, दूर
माधवों का भी माँ की प्रतीक होती है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objective - वस्तुनिष्ठ

- १) 'वालिका का परिचय' यह कविता सुभद्राजी कोटा जी ने लिखी है।
- २) सु. कोटा जी का जन्म १९०५ में रुद्राशाला में हुआ।
- ३) " " " " विवाह १५ वर्ष की अवधि में।
ठाकुर लक्ष्मणसिंह से हुआ।
- ४) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी प्रश्नावित होकर सुभद्रा जी के देश की व्यवस्था के लिए जीवन समर्पित किया।
- ५) 'ओंकार की बाणी', और 'विरोग के लिए जीवन समर्पित'
- ६) सुभद्रा जी नाश-जगत के लिए ए अमृत देने हैं।
- ७) " " ने वास्तव्य भाव पर भी कई कविताएं लिखी हैं।
- ८) सुभद्रा जी का निधन १९४८ में हुआ।
- ९) 'वालिका का परिचय' मह कविता नारी कल्पना, तथा माँ की भृत्या का उपात गान है।

* ----- X ----- +

STUDENT'S NAME	TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT
ROLL NO.	DATE

* छिन तो नहीं आती है - वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन'

* सारांश द्वारा उद्देश्य *

'छिन तो नहीं आती है' यह कविता वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' जी ने लिखी है। इस कविता में कवि ने प्रभजीवी, मजहर, कुली तुलियों के प्रति अपने आपको सभ्य साक्षात् वाले शास्त्रवाची लोगों का दोंगी बताव वाणिज किया है।

कवि ब्रह्मन कहता है कि

कवि सभ्य लोगों से प्रति इसे है कि पुरी स्थिति में जब रेल जा रही है लेह तुली, मजहर, पसीने को सम्पर्य आपसे ठकराते पले जाते हैं वे ने आप उनकी ओर तिरस्कृत हाथि दो कर्यों देखते हैं। लोक कर्यों किपाते हो ऐ आपको उनके इनकी धूना करो ?

तुली, मजहर है इत्तीलिए ने बोक उठाते हैं, डेला रवींचते हैं, धूल-धूरे में भास करते हैं। धनकर जमीन पर ही बढ़ते हैं। सपने में भी धरती, की धड़कन, कुनते हैं। यक्कर तुम्हा-तुम्ही रेल के पिघले उड़वे में तुमसे ईर बोलते हैं। ऐसे समय आप अपने अपेक्षाकृत्य कहने वाले उन्हें देखकर नाक-मुँह सिकुड़ते हैं, उन्हें आप असौंय, गेंदे भागकी तो। उनकी उम कर्यों नफरत करते हैं हो ?

इसपार इस कविता के बारा कवि ने

उद्देश्य भजहर, तुली लोगों के प्रति सोनेदेशी सोनों

की धांगी वस्त्रीय वाणिज किया है। उसके असल में इन लोगों के कारण ही हमारा जीवन संरक्षण का बलता है किंतु इस असे उन्हें, अनपह, गेवार, गेंदा नागजाते हैं। इत्तीलिए उद्देश्य कवि ने

STUDENT'S NAME		
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

इस कविता के बारा शब्दों का लेंगे
 स्वाधीन समाविष्टि विनियत करने का शब्दी, मण्डर
 लोगों के प्रति इन्हें जनकाण्डीयता आ भावधीयता
 का विवाद पूछा जाया है।

Q104मि

1]

सत्य-सत्य बातला आ
 जागावार तो नहिं लगती है।
 जी तो नहिं कुहा है।
 किन तो नहिं आती है।

2104मि → निम्नलिखित कानून जागार्थी से लिखित

'धिन नहीं आती है' कविता से सिया गया है।

अपश्चिमना → अ कवि इन पंक्तियों के बहु बताना चाहता है कि जब वेल के पिछले दिनों में मण्डर, शब्दी लौटकर बात करते हैं तो वह शब्दी लोग जो अपने आपको शिक्षित और साक्षर भूष्यकर कहते हैं तो वह घुन्नी की दृष्टि से उनकी आर दरकत है। तो इनी बात को लेकर शब्दी (जागेवारी) लोगों से प्रश्न करते हैं कि यह क्या पाठ्यायी प्रश्न है।

STUDENT'S NAME

TOTAL MARKS
OBTAINED

CLASS

SUBJECT

ROLL NO.

DATE

Objective — वर्णनिक

- ① 'धिन तो जहों आती है' यह कविता नागार्जुन द्वारा लिखी है।
- ② नागार्जुन जी को वैद्यनाथ मिश्र भी कहा जाता है।
- ③ " " का जन्म 1911 ई. में बिहार के सिरोनी गाँव में हुआ।
- ④ नागार्जुन जी एकात्मिक विचारधारा के कवि हैं।
- ⑤ नागार्जुन जी को आखिनी कवियों कहा जाता है।
- ⑥ नागार्जुन जी का मसांकुश पहले रॉयल कॉलेज लिखा है।
- ⑦ नागार्जुन जी की 5 नवम्बर 1998 को मृत्यु हुई।
- ⑧ 'धिन तो जहों आती है' कविता में कुली और मण्डर के नाम कवि ने विचार व्यक्त किए हैं।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

* 'नीड़ का निर्माण' - हरिवंशराव 'वर्षण'

सारांश और उद्देश्य

'नीड़ का निर्माण' यह कविता हरिवंशराव वर्षण द्वारा लिखी है। प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन की कठिनाइयों से बड़ने वाले सब कुछ नए हो जाने पर भी फिर भी नए निर्माण की ओर दृष्टि देता है। कवि पक्षी से बहना है कि है पक्षी। निराकाश + न हो और प्रेम को निमेश्वर देकर फिर एक बार घोसले का निर्माण कर। पक्षी एक बार फिर 360 आकाश में उम्बेदा द्वा गया, मह वादल द्वा गए, धरती उम्बेदे में दूख गई। ऐसा लगा दिन में ही बात हो गई। ऐसा लग रहा था कि अब उजाला ही न होगा। अबता भी अंगभीत हो गई। फिर यह आकाश की किरण पूरब से धरतीपर आ गई। फिर उजाला हो गया। लोग निराकाश को झटकाकर 360की की दूर अपके फिर काम पर लग गए।

इस के सिवे द्वांचे हो एवं एवं एवं उत्कर्ष गिर पड़े ऐसे कठिन संघर्ष पक्षीओं की है दृश्य विगड़ गई व्योंगि निनका-निनका जाऊकर रात-दिन मेहनत करके निल धोसले को उन्होंने बनाया था वह घुकान को हुई गया, नए हो गया। एवं एवं एवं एवं महल घुकान में नए हो गए।

ऐसे कठिन संघर्ष मनुष्य पक्षी के उदाहरण में मनुष्य को यह क्षेत्र दे रहा है कि कठिन परिस्थिति आने पर भी मनुष्य को उदाद, या निराशा न होकर काढ़ता ही नुकाबला करते हुए आत्मविश्वास भी छोड़ना चाहिए और फिर व्यग्र से हमता से अपनी माँजिल तक पहुँचना पाएं।

कवि यह भी कहता है कि नितिया का जब घोसला नए हो जाता है तो वह फिर एवं वर व्योंग में निनका लेकर पक्षी को निमा दिवाकर उम्म आकाश में उंची उड़ान भरती है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

कवि मनुष्य को वाह बताना पाता है। नारों के दुरव से उमी दृष्टि नहीं निर्माण का चुरने। प्रलय होने के बाद किस कृषि के साथ निर्माण का वयस्क भलता ही रहता है। नाश के बाद निर्माण वह जीवनपत्र है। कुरव के बाद दुरव और दुरव के बाद दुरव यह नियति का बजा है। मनुष्य को अपने जीवन का गीत छोड़ सकें भी, उत्तमविवाह से मेटनत, लगाउ, ईमानदारी से गाते रहना ही आहिए।

उद्देश्य → कवि ने मनुष्य को बनोह से जीवन का निर्माण करने का संरक्षा दिया। जीवन हार, जीवन उदास दुर जीवन के वय की मेलिध तक पहुँचाना मनुष्य का चाही है। और यही बताना इस गविना का उद्देश्य है।

* सन्दर्भ सीलन व्याख्याकरण *

II

नाश के दुर्घटना के छमी
 दृष्टि नहीं निर्माण का लक्ष्य
 प्रत्यय की निरन्तरता से
 शूष्टि का नव गान फिर-फिर!

सन्दर्भ

निरन्तरित सन्दर्भ दरिवेशाचार्य 'जयन' द्वारा लिखे गए 'नीड का निर्माण' कविता से सिध्या गया है।

व्याख्याकरण

कवि इन पांचों में यह बताना चाहता है कि नाश के उपरान्त निर्माण यह सूचित न हो सकता है। कुछ वर्तम कुआ तो भी फिर जो शारीर यह ज्ञान का वर्ष है। प्रत्यय आने के बाद मनुष्य जावन रूपद्वय हो जाता है जिसे फिर मानव सूखे का नव गीत गाते कुरु प्रारंभ करता ही है।

Objective — क्षमुनिष्ठ प्रश्न

- ① 'नीड का निर्माण' कविता दरिवेशाचार्य जयन के लिखी हुई
- ② जयन का जन्म २७ नवंबर १९०८ को हल्लावाड़ी में हुआ।
- ③ दरिवेशाचार्य जो को हल्लावाड़ी का जनक एवं जाता है।
- ④ मधुशाला, मधुवाली, और मधुकलश। दरिवेशाचार्य जो के नीन मधुर नाम संबोध है।
- ⑤ नीड का निर्माण कविता मनुष्य के नए निर्माण की प्रका॑र है।
- ⑥ नीड का अर्थ धोखला है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

पानी की प्रार्थना - केवल लिंह

सरांश
ओर
उद्देश्य

'पानी की प्रार्थना' में कविता के बाबनाथ लिंह जी ने लिखी है। इस कविता में पानी के बाबनाथ अपनी व्यथा व्यक्त कर रहा है। पानी के बाबनाथ को पृथ्वी का प्राचीनतम नागरिक मानता है और अपने अस्तित्व का समाप्त होने देख अपनी व्यथा को छुनता है।

पानी कहता है कि अद्भुत घड़ियाँ दिनों के बाद भी तब पर उच्च चीज़ (पक्षी) आई तबने अपनी लंबी चौल गड़ा दी और पानी पीने लगी जब पानी को यह अद्भुत दुआ कि ज्ञायद उसको खील के कुंठ में और कुट से रक्षा में बिल्लन दे देह। फिर उसी दिन अपर एवं जानवर आगे और पानी को अभर-अभर आवाज छक्टे हुए पीने लगा। अस्ति यह विचित्र आवाज भी पानी की कुरुष और आनंद के गई। नील और जानवर के 3520 अन्तराल एवं अरवाहा अपनी ज्यादा बुद्धाने पानी के पास आया लेकिन जैसे ही उसने अपनी अपने दोनों हाथों में पानी भर लिया तो उस पानी में उसे कमरा पिरवाहि दिया अरवाहा ने उसे पानी के दिया इस घण्टा से पानी शामिन्द्रा से गया।

पानी अपनी मनोवैद्यना अद्भुत करते हुए आगे चलकर जहता है कि मानव तो अपना प्रियाल छरते हुए शाह नथा नाद पर पुकुर गया वहाँ मेरा अद्यतन 3000 वर्षोंने रघुज जिकाला किंतु वर्ती पर में जप्त होते जा रहे हुए साथ ही वह सब को गले लगाते हुए रुक्खों के बाजार में मैं किसी जकिसी 25 में मोर्जुद हुए। [जाथरग शारावि, पेट्टी, कोडाजोली] इसका कविने आर द्वारा पर दरता है परन्तु पानी को कुमी का वहाँ करते हुए भविष्य में मानव जीवन पानी के लिए जिवन्प्रकार संकेत की रवाई की गिर सकता है इस बात का संकेत दिया है। और महि वताना इस कविता का उद्देश्य है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

सून्दरी की रसायनिकी करणा

1)

पर अपवाध क्षमा हो गया
 और यदि मैं हुआ बोलू
 हो जलकर हो जाऊँ २१२७
 तो हो इसमें
 ३-१४ की भी सहमति है।

सून्दरी → निवासिरकित सून्दरी कुदारनाथ लिंग सिरकित
 'पानी की प्राचीनी' कीविना ले किया गया है।

2) रसायनिकी →

पानी अपनी मनोवैज्ञानिकता हुई
 मगवान के क्षमा माँगते हुए कहता है
 कि मनुष्य पानी को कमी होने जाने के लिए
 जिन्दार रखते हैं। पानी मगवान पर आवेद करते
 हुए कहता है कि मैं हुआ बोल वह इसी
 जलकर रखते हो जाऊँगा। धरती पर पानी का
 नहीं होने के लिए मानव जितना जिन्दार है
 उन्हांना ही मगवान भी इसी में सहमति है
 तुझीलिए तो यह सब कुछ होते हुए भी मगवान
 नुप ही बोठा है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objective

- 1] 'पानी की मार्गिना' यह कविता केवलनाथ सिंह जी द्वारा लिखी गई है।
 - 2] केवलनाथ सिंह जी का जन्म 1937 को अक्टूबर महान के शुरुआती दिनों में हुआ।
 - 3] केवलनाथ सिंह जी की मृत्यु 19 मार्च 2018 को हुई।
 - 4] पानी की मार्गिना कविता में पानी की उल्लंघनों की गमोद्धर समस्या का विचारणा हुआ है।
- X X

STUDENT'S NAME	TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT
ROLL NO.	DATE

3) कोशिश करने वालों की छार नहीं होती

सोधनलाल द्विवेदी

कविता का सारांश और उद्देश्य

* 'कोशिश करने वालों की छार नहीं होती' यह क्रीति। सोधनलाल द्विवेदी जी ने लिखी है। इस कविता में कवि ने यह मेंढ़ा पूछा है कि जो मनुष्य कोशिश करके अपने मंजिल तक पहुँचता है वही जीवन में सफल होता है।

कोशिश करने वालों की छार नहीं होती यह बात जो महसूस रामकृष्ण पाठ्यकार द्वारा भी जीव जृहना है कि लघ्नों से उत्तर कर जोका पलोनेवाले उमी नोका छोड़ने वीच में नहीं छोड़ते। बड़ी बड़ी लघ्नों से पार करके इस पिनार से उस किनारे तक निकल ही पड़ते हैं। उसी तरह भी नन्हीं चींही मुँह में छोटा खा दाना पकड़कर व्हो वार दोबारों पर एवं चढ़ती किलतनी है किंतु कोशिश करके कामयाद हो ही जाती है। धैर्य ही सिंचु नदी में गोनावरोर कई झुक्कियाँ लगाकर भोनी हूँहता है। बोंबार छिरता है किंतु भोनी को हुँदूकर ही दम लेता है।

कवि इन तीन उदाहरणों से आगे पलकर अंत में जृहना है कि असफलता, एवं नुनोती (Chagada) है उसे व्याकार करके गत्यक मनुष्य की विश्वास, काहना, आत्मबल, मेधन, लगन, ईमान-हसी से अपनी मंजिल तक पहुँचना ही न्याहिर्द। दूर, उदास, लेघर, दम, अगर, वृक्ष, गद तो हम अपनी पहचान नहीं बना पायेगो। संकट, समस्याएँ, गठिनारुओं आनी रहेगी उन्हें पार करके कोशिश करते हुए हम जब आगे बढ़ेगे तो असफलता अपने आप हासिल होगी। हम अपने ध्येय तक पहुँचेंगे ही।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

उद्देश्य → इसप्रकार यह कविता के बारे कवि ने

नीन उदाहरणों के बाहर स्पष्ट किया है कि जो कोशिश करता है उसकी उभी धरण नहीं होती। आलंदय, विद्या, असफलता को पहचान करते हुए, जोकी, उम्मीद, महसूस, लगन, और कोशिश तो मनुष्य को सफलता की दिल तरफ आदित्य और यही वर्ताएँ इस कविता का उद्देश्य है।

* संबन्धित *

I] असफलता एवं दुखोती है --- खोना भी तो क्या कुमी रह गई, देखो और सुधार करो जब तक ना सकते हैं जीव चेहरे को त्यागो तभु सधार्पे का मेदान होड़ भग आगो रुम।

संबन्धित → निम्नलिखित सर्वार्थ सोहनलाल द्विदी लिखित कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती। कविता के प्रत्यय गया है। यह संबन्धित कवि ने पाठकों से आगे लिया है।

2] संघर्षिकरण → कवि कहता है कि मनुष्य के सामने असफलता एवं दुखोती है उसे बचाकर करके। हमारी कुमीओं को हमें परवरणा आदित्य, उत्तरपूर्व अंमल करके, सुधार करके सफलता की भाग देना। जब तक मंजिल नहीं पुलिसी तब तक जीव चेहरे त्यागना। मनुष्य का धर्म है। संघर्ष का मेदान या धार की डक्कन पौध उभी हटते नहीं पाइए। मेदान और निरेतर उस के प्रयत्न के मंजिल तक पहुँचना ही सफलता की इच्छी है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objectives

- 1) ज्ञानिका उरनेवालों की हार नहीं होती यह उनिहास सोहनलाल द्विवेदी जी ने सुखी है।
- 2) सोहनलाल द्विवेदी जी का जन्म 1906 में अनेकुर जिले के लिंगड़ी की नामक गाँव में हुआ।
- 3) सोहनलाल द्विवेदी जी को मर्हनमोहन मालवीय जी से राष्ट्रीय भावनाओं की शिरोपा प्राप्त हुई।
- 4) सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय पत्र 'अधिकार' के संपादक रहे।
- 5) सोहनलाल द्विवेदी जी को मारवनलाल वडेवी जी से शिरोपा प्राप्त राष्ट्रीय का निर्माण किया।
- 6) 1970 में पद्मभूषण पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 7) सोहनलाल द्विवेदी गीतारचारा के संस्थापक है।
- 8) "द्विवेदीजी के राष्ट्रकवि का समान भी मिला था।"
- 9) सोहनलाल द्विवेदी व्याख्यातार कवियों में स्थेष्ठ कवि माने जाते हैं।
- 10) सोहनलाल द्विवेदी जी की मात्रा इन्हें परिमाणित रखड़ी बोली है।
- 11) बाल साहित्यकार के रूप में भी सोहनलाल द्विवेदी जी अपूर्व प्रीतिय दिया जाता है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

* बोनों की दुनिया - गिरिजाकुमार मातृर आर्या और उद्धय

'बोनों की दुनिया' २८ कविता गिरिजाकुमार मातृर जों ने लिखी है। कवि ने इस कविता के लिए २८ १५५८ लिखा है कि ८२ मनुष्य किसी न किसी १९५ में बोना है। आर्या वह मन के बोना है जो कई महिलाएँ से आर्या कई लुधि और विवेक से।

कवि ने इस कविता में मनुष्य के बोने क्यों को कई उदाहरणों से व्यक्त किया है। ऐसे कविता के लिए घोना, नेताओं के लिए अनेक प्रैचलगुए [प्रमथ] घृण्णलग्नों के लिए पाठक, आठदोलन कर्त्ताओं के लिए भीड़, धौमों के लिए मक्त, राज्यों के लिए वर्षक, काव्यवानों के लिए मजड़र, वासु के लिए चतुर्मेश, राजाओं के लिए गुलाम, लोकलंगों के लिए मीठिया आदि कई उदाहरणों से कवि ने मनुष्य के बोने होने का स्कैप दिया है।

कवि आगे चलकर कहता है कि मनुष्य की यह बोना १९५ तुर्ह लदियों से चलना आ रहा है। ए धायल स्थिपाहि की तरह बोनों को धायल ही बनकर जीवन जीना पड़ता है। लदियों से हुए बोनों के १९५ में गुलामी का जीवन जो रहे हैं। हार्दिक पास लुधि, विवेक, दिमाग, महिलाएँ होते हुए भी उल्का सहि ३५यों न करके बोने बनकर ही जी रहे हैं। जियका ३५यों वालसी ऐसी बाल होता सहि अश्वा में कर रहे हैं और उनके लिए ही हम दासता का जीवन जी रहे हैं।

इसकार कवि ने बोनों की दुनिया कविता में बोनों के जीवन की व्याख्या स्पष्ट की है। और वही इस कविता का उद्देश्य है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

2-102मी

1

"हम कुछ नहीं हैं,
मन को मात्रपक्ष से भी
बुद्धि से, विवेक से भी,
व्याकिं और जन्म हैं
साधारण है जहाँ है विशिष्ट"

2-102मी →

निम्नलिखित सन्दर्भ गिरिजाकुमार मासुर लिखेते
(बौद्धों की उनिया) कविता से लिया गया है।

अधिकृतीय → इस सन्दर्भ में कवि ने हम सभी को

बौद्ध धर्म की बात कही है मन, मात्रपक्ष,
बुद्धि तथा विवेक हैं सभी से हम केवलकार
बौद्ध बन हुए हैं यह बातों का प्रशास किया है।
कवि यह मी कहता है कि हम बौद्ध इसलिए बने
हुए हैं कि हम बहुत ही साधारण जन हैं।
हमारी कई विशिष्ट या अवास पहचान ही नहीं
है इसलिए हम बौद्ध जनकर ही रखा गया है।
और हम इसकी के लिए हम ही जिम्मेदार हैं।

+

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objective

1) 'बोनों की उनिया' यह कविता गिरिजाकुमार माधुर जीं ने लिखी है।

2) गिरिजाकुमार माधुर जी जन्म 22 अक्टूबर 1919 में चुना (हि. प्र.) में हुआ।

3) गिरिजाकुमार माधुर 'तावसपतक' के साथ कवियों में से एक भावे जाने है।

4) गिरिजाकुमार माधुर जीं ने रागनीपल पत्रिका का संसाधन किया।

5) 'इस लोगों का भयाव' प्रशिक्षण वाले गाने गिरिजाकुमार माधुर जीं ने लिखवा है।

6) गिरिजाकुमार माधुरजीं को 'मैं वक्त के सामने' यह प्रशिक्षण कविता लोंबढ़ा है।

7) 'सुझे ऊंट भी कहना है' यह किताब गिरिजाकुमार माधुर जीं की सामग्री काव्य यात्रा का परिचय है।

8) १० जनवरी 1999 में डि. माधुरजीं का निधन हुआ।

9) 'बोनों की उनिया' कविता में कवि ने साधारण जनता को बोनों के बोना भरा है।



4] आज का दिन - लोलांगर जगही

सांवादी और उद्देश्य

* 'आज का दिन' मट जीविता लीलावर जगही ने लिखी है। इस कविता में जीवि ने कवि के अस्तित्व के बारे में अपने अंमीर विचार व्यक्त किए हैं। जीवि ने जीविता के प्रारंभ में कवि का मृण-हत्या का अवारण किया है कि अगर आज का दिन पुरे देश में किसी भी डोक्टर ने मृण लिंग का परिक्षण करने के लिए १०८१२ तक तुम्हें तुम्हारा - मृण हत्या नहीं की होगी तो वह दिन देश के लिए ऐतिहासिक रुप ला सकता है।

उसी बारे रचावह वर्ष की छात्रकी अक्षेत्री साइक्ल सीरिजे के लिए पुरे देश निकालकर जो रुपी होगी तो वह दिन देश के लिए ऐतिहासिक रुप ला सकता है।

कवितार जीविता राहवर ने कोई कवि किसी पुरुष का पता नहीं है और वह उस राहवर में सुरक्षित है नो वह दिन भी ऐतिहासिक रुप ला सकता है।

जीवि आज पलकर एवं वह भविजे की बज्ये की दिन उदाहरण की दिन तुम्हारा है कि अगर इस महिने की बाजी बिलबर पर पलटी रवाना होत रही है तो वह एवं साथ माहिने में बोना चाहे वह प्रसीद पलटी मासी हो तो वह इसी भी और रुद्र होल भी देती है तो इनी की वात भी समाचार पत्र में News channel में पर आती है और वह दिन भी ऐतिहासिक रुप ला सकता है।

इनी ले नहीं साइक्ल सीरिजे वाली रचावह की छात्रकी चोट रवाना भी लीजा किसी की मरन के हस्तों तुम्हें उदाहरण लेपित एवं निकला पड़ा है तो वह दिन भी ऐतिहासिक रुप ला सकता है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

इस्तेन्द्र का इन उदाहरणों से कवि के यह बताना है कि प्रथम किया है कि मार्गीय स्त्री के लिए एक मातृली धरण भी ऐतिहासिक मानी जाती है। साथीयों से उसे हमेशा लंबामें जरकड़कर करवा गया है और अब वह अपेक्षा कुछ उत्तर आहती है तो उसकी ओर कई नज़रों से देखा जाना है। अतः इस कविता में नारी के अद्वितीय के लारें गोमीर विचार प्रकृति किए हैं। और यही कविता का उद्देश्य है।

सन्दर्भ

II. अगर आज भी उन्हीं डाक्टर ने शुरू की लिंग वर्गीकरण से इनकार किया है।

अगर आज कहीं नहीं हुई कुन्या-शुरू-हत्या तो आज की दिन ऐनहासिक हो सकता है।

सन्दर्भ → निम्नलिखित सन्दर्भ लीलाधर जगद्गुरु लिखित 'आज का दिन' की विवरण से लिया गया है।

सन्दर्भ

कवि द्वारा यह बताना चाहा तैयारी के दृष्टि में अगर उन्हीं डाक्टर ने शुरू की लिंग वर्गीकरण से इनकार कुन्या-शुरू-हत्या नहीं की होती। तो वह दिन दृष्टि के लिए ऐतिहासिक मानी जाएगी। इस्तेन्द्र शुरू-शुरू-हत्या। और लिंग वर्गीकरण के के अद्वितीय पर ही प्रश्न उठा रहे हैं। और इस गोमीर समस्या का सिर्वाच इस कोर्स में उछिया गया है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objective — वसुनिष्ठ प्रश्न

- 1] 'आज का दिन' यह कविता लोलाधर जगदी जी ने लिखी है।
- 2] लोलाधर जगदी का जन्म १ जुलाई १९४० में उत्तराखण्ड के घंगाण गोप में हुआ।
- 3] लोलाधर जगदी 'उत्तराखण्ड वर्णन' पत्रिका के प्रमाण संपादक रहे।
- 4] जगदी ने १९६० के बाद हिन्दी कविता को एक नई पहचान दी है।
- 5] जगदी जी को १९९८ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से तुरंत किया गया।
- 6] लोलाधर जगदी जी को २००४ में पद्मभूषण पुरस्कार से तुरंत किया गया।
- 7] 'आज का दिन' यह कविता रुग्नि के अस्थितिश्च के विषय में गीतीर चिंतन व्यंग उत्ती है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

5] बच्चे जाम पर जा रहे हैं —

राजेशा जोशी

आरांडा और दृष्टि

बच्चे जाम पर जा रहे हैं यह कविता राजेशा जोशी ने लिखी है। इस कविता में कवि ने ज्ञाल-प्रासुद समस्या का गोमीर शृंग से विचार किया है।

कवि कहता है कि कोहरे से लौटी अड़क पर छोटे बच्चे जाम पर जा रहे हैं। कवि का मानना है कि यह यह दृष्टि बहुत ही मध्याह्न है बच्चे जाम पर क्यों जा रहे हैं यह बहुत बड़ा सवाल है। कवि हम से यह प्रश्न कर रहा है कि क्या इन बच्चों की गोदे (बॉल) उन्हीं आकाश में रखा गया है। क्या रंग-बिरंगी इनकी किंतुओं के क्रिसी ने रखा लिया है, क्या इनकी इनके सारे रिवलोन पहाड़ के नीचे दब गए हैं क्या इनके मदरसे (स्कूल) भूमि में टैक गए हैं।

इन माझम बच्चों को उपलब्ध हुए के मैपन, बगीचे, घरों के ऊपर उन्हीं गुम हो गए हैं।

कवि बच्चों की इस गोमीर दृश्य का विचार कुसा दुआ बहसो ही प्रश्न करता है जि अगर बच्चों को जाम पर लाना पड़ रहा है तो इसी दुनिया में क्या है ?

इसकार इस कविता के बाहर कवि ने छोटे बच्चों की मज़ूरी की मज़बूती का दर्दनाक वर्णन किया है। जिस उम्र में बच्चों को फ़ूना, लिखना, खुदना, रेखना आदि उम्र उम्र में यह बच्चे दूर की गशिया के लाना दूर करने की शोषण के लिए जाम पर खा रहे हैं। क्यों यह सहि है ? यह तो भरी तरह गलत है। यह उन गोमीरता से सोचना समाज और सरकार का जाम है। और इसी गोमीर

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

आ पितृण इसे करना हम उकिता का विदेशी है

संदर्भ

॥

वहाँ से आम ५९ जा रहे हैं।
हमारे वास्तव की सबसे मराना प्राप्ति है यह
मराना है इसे विवरण की तरह लिखा जाना।
लिखा जाना योहु इसे सवाल की तरह
काम ५९ क्यों जा रहे हैं क्यों?

संदर्भ →

निष्ठालिखित संदर्भ शालेश जोशी लिखित
वहाँ काम ५९ जा रहे हैं उकिता को लिखा गया है।

उत्तरीकरण →

इस संदर्भ में कवि ने वहाँ की काम
५९ जाने की मरावह समस्या का पितृण उत्तर दिया है। वहाँ काम ५९ जा रहे हैं इसे
वास्तव की तरह न लिखना वहाँ काम ५९ की पर
क्यों ना रहे हैं इसे प्रश्न की तरह लिखना।
लिखित वर्णों के बाल-प्रामिकों की यह समस्या
अङ्गत गंभीर और मरावह है। इस पर
कोपना आज वर्त्ये मनुष्य का जन्म है।

Objective - वर्तमान संक्षेप

- १) किसे काम पर जा रहे हैं - यह कविता राजेश जोशी
- २) राजेश जोशी का जन्म १८ अक्टूबर १९७६ में नरसिंहपुर (नव्या पट्टिया) में हुआ।
- ३) राजेश जोशी जो ने १९६७ से २००१ तक
भारतीय कला वेद में काम किया।
- ४) राजेश जोशी ने 'निराला शताव्दी अंक' का संपादन किया।
- ५) मुक्तिवोध पुस्तकाल — १९८४
मार्गवनलाल अनुवादी पुस्तकाल — १९८५
डीकोत वर्षी सृष्टि समाप्ति — १९८६
शामशेर समाप्ति — १९९६
साहित्य अकादमी पुस्तकाल — २००२
- ६) 'किसे काम पर जा रहे हैं' कविता में उन्होंने
वाल-चामिक समझा की गोभीरता से प्रियां
(किया है)

* मन आजाद नहीं है - निरज

मानकोशा और उद्देश्य

'मन आजाद नहीं है' यह कविता निरज ने लिखी है। प्रस्तुत कविता में निरज ने स्वतंत्रता मिलने पर की हारे मन की पराधीनता पर चिन्ह लगा की है। कवि का कहना यह है कि आज हम शरीर से स्वतंत्र हो गए हैं लेकिन मन की बेड़ियाँ आज भी बेही की बेंजी ही हैं। स्वतंत्रता का इनिटिएट तो हमें सिख दिया परन और सभ्यता की वाल भी हमें बदल दी। वामप्राज्ञ का सपने हमें तो हमें देरवा किंतु आप की भव्यता ही स्थिति देरवार वह सपना ही बनारे है गया है। ब्रिटिशों की गुलामी से तो हम आजाद हो गए किंतु मनहृष्ट, धर्म धार्घोथ के नामपर आज भी हम लड़ रहे हैं। अंग्रेजों के शोषण से देश को आजादी तो मिल गई। नवचुंगा का निर्णय तो हमें कर दिया गाया और प्रथम से भारतदाता को सुशोभित किया। शाकिं और प्रथम से भारतदाता को सुशोभित किया। गोव, शाहर, देश गा विकास तो होता रहा किंतु मंदिर, मार्केट और गुरुकारों में के नामपर आज भी हम संकुपित प्रवृत्ति को उठाना चाहते हैं। हम सब हम आपस में ही ही बौर मोल से रहे हैं। हम सब एक है का भारा तो हम सगाते हैं किंतु नारे की पिंड धूणा, मत्सर, देष भावना, जाति-पति की उम्मीद नीचता का, सामाजिक विषयता का जाल बढ़ा दे जा रहा है।

एक साथ आगे बढ़ने से ही सभ्या मानव धर्म विकास के पाठ्या फार्गा चांगा और जगमग के आने से यही तो संकेत या संदेश मिलता है किंतु धूप के गरम लधु से बदले की मानवा वाणी जा रही है जिसके कारण मालूमों का जीवन बोधाल हुआ है। आतः तब तो आज स्वतंत्र हमारा किंतु मन आजाद नहीं है।

इत्यपकार कवि ने वर्मानवाता के बारे में एक काव्य लिखा है। इसका नाम 'आज' है। इसमें आज की वास्तविकता और आज का समाज की दृष्टि से वर्णन किया गया है। इसमें आज की विभिन्न स्थितियों का वर्णन किया गया है।

सांदर्भ

१] वर्षायापि वहले आज दी इस भाव
एक हमारा उम्र केरा है,
वृष्टि वह किन्तु घूमा ना

‘वर्षायापि कर जिम्मीं रहे हम
एक नई नववी तारों में
सीमित किन्तु उमारी छुजा
मनिदृ, माझिदृ, गुरुद्वारों में’

सांदर्भ → निम्नलिखित सांदर्भ जीवन लिखित
‘मन आजाद नहीं है’ कविता के लिया गया है।

वर्षायापि → कवि इस पंक्तियों से यह कहता चाहता है कि आज मानव अपनी शुद्धि कोशलता से विनाश की कई सीढ़ियाँ पाकर उन्हें लुका है किन्तु आज भी उनके मनमें यथा और जानि प्रति-पाति के भेदभाव के कारण संकुपित एवं प्रवृत्ति का बढ़नी जा रही है। ओर यह कारण ही अवगति का जावना मालिनी एवं होते हुए भी हाने अपने धर्म के अनुलारे उपर्युक्त मानवाने का भी विभाजित किया है। कवि गुरुद्वय की इसी संकुपित प्रवृत्ति का विश्वास विष्वास विष्वास में रखता है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

Objective - वस्तुनिष्ठ ५२७

- ① मन आजाद नहीं है' यह क्वेचा जीरज जी के लिए है।
 - ② गोपालदास रामेश्वर का हक्का नाम 'जीरज' है।
 - ③ जीरज का जन्म 1926 को हठापा पिला के पुरावली गाँव में हुआ।
 - ④ जीरज के काव्य की मात्रा मानव मन की भाषा है।
 - ⑤ जीरज का निधन १७ अगस्त 2018 को हुआ।
 - ⑥ जीरज हिन्दी के लोकप्रिय गीतकार है।
 - ⑦ स्टॉन्डर्ड, प्रैम, शोधि और मृत्यु जीरज जी के नाम सात्य है।
 - ⑧ मन आजाद नहीं है क्वेचा में कहि मानव मन की पराधीनता पर पिला प्रकट करता है।
- X

STUDENT'S NAME	TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT
ROLL NO.	DATE

* गौतम एक बार फिर आया *

दो जयप्रकाश ठहरे

ओर उद्देश्य

'गौतम एक बार फिर आया' मह कविता दो जयप्रकाश ठहरे जो ने लिखी है। इस कविता में कवि अह शुद्धि देना प्राप्ता है कि देवा में जनिय हिंसा बढ़ रही है। दलित के प्रति अनादर्या ए पनप रही है।

इस परिभ्रष्टि के बारे कवि गौतम बुद्ध के घिनती करता है कि है गौतम एक बार फिर तुम्हें इस घट्टी पर आने से चाहिए। पूरे मानव जाति को शुद्धि, शांति, सामाजिक और राजनीति का संदेश आप के बारा देना आवश्यक है। आज मानव जीवन नेतृत्व मूल्यों का धारा गे रहे हैं साथ ही समृद्धि और संरक्षण का विनाश हो रहा है। कैबनर्स्या बढ़ती जा रही है। घृणा, हिंसा, छोड़कार पनपता जा रहा है। सामाजिक जनता, धीन, कुर्बानी, अस्ताय मानव दुख का विकास कर रहा है। मनुष्य के मन का मलिनता भिटाना अनेक आवश्यक है। इसके लिए गौतम तुम्हें फिर एक बार आना जरूरी है। वास्तु के देव पर विश्व रक्षा है। विश्व के बारा मानव का विकास ना हो दूँगा है, इस कानिंघम असे निर्भाग की है लोकों उसका आधुनिक साथ के मनव-जाति का संशर मी बना जा रहा है। इस दिव्यता की वल्लभ के लिए इस भ्रमड़े पर शान्ति और शुद्धि वरसाने के लिए है गौतम कृपा करके तुम्हारा धरती पर आगमन आवश्यक है।

आपको यहाँ पधार ना जानि- पानि और मजहब की दीवारों को नह भरना। आवश्यक है। अनुवाद, और हिंसा का नाश भरना। को शक्ति है गौतम आप हो है। इसके साथ

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

शील [पाठ्य वा परिवर्तन] और सूधम (जा निर्माण करने का समय जा गया है) और है गोतम ऐसी एक परिवर्तन आपके द्वारा ही हा सकता है इसलिए आप भी एक बड़ी घटती पर आ जाओ।

इनमेंकार कवि को संगता है फिर से गोतम लुट्टे आए तो शान्ति और अमल का निर्माण होगा। मानवीय प्रकाश का निर्माण होगा। कवि का सन्देश है कि आज उसे मुझे नहीं लुट्टे (शान्ति, अद्वितीय) पाहें। यह वताना इस कविता का उद्देश्य है।

सांख्य लाइल द्वितीय काव्य

□

लाइल के द्वे प्रथम विश्व रूप हैं द्वेष
किलने उच्चल आचाम छुट्टे हैं हमने
अपने संदर्भ के आप बने हैं दरवों
हम भू-मृड़ल पर शान्ति लुट्टा वरसाओ
गोतम एक वार फिर आओ।

संदर्भ

निम्नलिखित लाइल द्वांशु दो खण्डकाणा कहीं
लाइल गोतम एक वार फिर आओ, कविता
की लिया गया है।

लाइल का → इन पंक्तियों के द्वारा कवि यह माना है
जोहा है कि मनुष्य ने जिसे अपने लुट्टि
गोतम से विकास की दीर्घ सीढ़ियों पार कर
पुको है किन्तु इसके साथ लाइल का निर्माण
कर रखा का जी संदर्भ जो करवाया है।
और हाथों अवावह रखता है गोतम आपको

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

मिर द्वारा हल था अंडल यह शान्ति और
सुधा प्रक्षेपण। ३११७८५ है इसीलिए मिर द्वारा
वार का ३११८७। हम घरती है आना ३११७८५।
है।

Objective

- ① गौतम द्वारा लिखा गया शान्ति और अंडल जी की लिखित है।
- ② डॉ जयप्रकाश कर्मन दलित आनंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता है।
- ③ गौतम द्वारा लिखा गया शान्ति, वह गविता जयप्रकाश कर्मन जी के निनका-निनका काव्य संग्रह से ली गई है।
- ④ यह गविता शान्ति और अंडल का संदेश प्रमुख है।

STUDENT'S NAME	TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT
ROLL NO.	DATE

* ओ अर्थी लड़ियों *
प्रिया कृतियार

साहस्र ओर उद्घृत्य

'ओ अर्थी लड़ियों' वह कविता प्रिया
कृतियार द्वारा लिखी है। इस कविता में कवयित्री
ने लड़ियों को रुकुश की जीन का संदेश दिया है।
कवयित्री कहती है कि ओ अर्थी
लड़ियों तुम मुख्य वाहनों में सज गे अपने हड्डी
को छिपाकर हस्तन का प्रयास करनी हो। सबकुछ
अंदर- ही - अंदर धूर फूर चुम्बी की चुनर ओढ़ने
सहनी रहती हो। और इस ऐसी परिस्थिति के
अपने पर सादकर तुम समझती हो। जो ऐसा
फूरने से ही लोग तुमसे रुकुश हो पायेंगे।
ओ अर्थी लड़ियों अपने अवमानों की
लाश ऊढ़ने, सिद्धियों से आप पर लगाये। गाये
श्रीनि, दिवाजे, नियमों से अपने को लोधने
तुम रुकुश रहने का नाटक कर रही हो।
कवयित्री अगे चलकर कहती है कि रुकुश
हस्तनोंवाली लड़ियों को जमाना भी उमी मी
अर्था नहीं कहती। उसीद्वयों से नाशी ने जो
प्रिवाह के सपने देरे लेके कोई नो राष्ट्रजनार
आएगा आपको शादी करके जिन्दगी की तमाम
रुकुशियों देगा। और उसके बादले आपको
उसका परिवार संभासकर, वज्र उसके बाज्यों की
मो लगाकर दिए। अपने व्यक्तिगत सपनों को
द्वारा २२९८८ अपना जीवन शामिल करते हुए
जीना ही आपन के जीवन की सार्थकता।
मानी गयी है। इतना ही नहीं बल्कि वह अपने बहुत
की भी कामना रुकुशियों बनाकर ही करना मरना
चाहती है।
लेकिन कवयित्री इस परिस्थिति को
अब बालने का संकेत देने द्वारा कहती है कि
ओ अर्थी लड़ियों उसीद्वयों से Modern

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

इन वंचनों में जीकर कृष्ण क्यों नहीं जाता। अब 30 वारे इन सदियों से लगाये गये बन्धनों को 30 वारे इन दस्माँ-रिवाजों को उत्तोर रुक्षकर हस्तों रुक्षकर जीओ। अब सिफ्ट अपनी इच्छा करें, अपने स्पने लेकर मार्गनी रहे उमड़ा, पढ़ा, करो। ऐलगाम नाचने दो अपनी इच्छाओं के लोगों की जावाजगी को ताज एवं बार कोड़ दो। यह दुनिया के लिए आपके बानकर जाने का सभी आप समाप्त, कर दो। और अब अपने लिए जीकर अपनी इच्छा पहचान बना दो और अपना अकिलत निर्णय करो।

इच्छाकार कवियों ने इस कविता के द्वारा श्रीनि-रिवाजों के नाम पर लड़कियों पर लंगाई जीनेवाली पावनियों, बन्धनों को तोड़कर रुक्षकर जीने का संदेश दिया है। और पहि यह कविता का उद्देश्य है।

प्रत्यक्ष साहित सम्पर्ककरण Objectives

- 1] 'ओ अर्थके लड़कियों' कविता अतिथा कवियार दों ने लिखी है।
- 2] अतिथा कवियार का जन्म 21 जुलाई 1975 में कानपुर उपर प्रक्षेत्र में हुआ है।
- 3] 'ओ अर्थकी लड़कियों' कविता में लड़कियों को रुक्षकर जीने का संदेश दिया है।

STUDENT'S NAME		TOTAL MARKS OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

२१०८मी श्रीहिंदु संघीकरण

।।

ओं अद्यती लड़कियों
 अब कियी का नहि
 झेंभालो दिए अपना मान
 बेलगाम नामने को अपनी रवाहियों को

सं०८मी→

निजलि १२वें सं०८मी प्रियमा काटियार लिखेतु
 'ओं अद्यती लड़कियों' कविना से लिया गया है।

सं०८मीकरण→

कवियत्री ने इन पंक्तियों के द्वारा आप की
 लड़कियों को सादियों से भावे गये शीनि-रिवाजों
 को तोड़कर अपने समान को जाहून रखते हुए
 बेलगाम नामने हुए २४वें जीने का अपने
 रवाहियों को अपने बलवूने पर प्रश्न नहीं की
 संदेश दिया है।

